"सितार पर स्वतंत्र वादन शैली के विकास का प्रारम्भिक युग" (18 वी शताब्दी के सन्दर्भ में)

डॉ. शिल्पी नाहर
पोस्ट डॉक्टोरल फेलो (संगीत)
वसंतराव नाईक शासकीय कला एवं समाज शास्त्र विज्ञान संस्था, नागपूर

प्राचीन काल में सभी तार युक्त वाद्यों को वीणा की संज्ञा प्राप्त थी। प्रचलित वीणाओं में कच्छपी, कूर्मी, सप्ततंत्री, एकतंत्री, भाततंत्री तथा त्रितंत्री वीणा का प्रमुख स्थान था। हमारे विद्वानों ने सितार को त्रितंत्री वीणा का विकसित रूप माना है। जिसका मुख्य विकास, प्रचार व वादन 18 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध से आरम्भ हुआ।

इतिहास से यह ज्ञात होता है कि अति प्राचीन समय से गायन की संगति वीणा द्वारा होती थी। कालांतर में जब वीणा का स्वतंत्र वादन आरंभ हुआ तो वीणा में नियमबद्ध क्रियाओं, बोलों और बोलों से निर्मित सौदर्य उपकरणो का तथा छन्दों का प्रयोग किया जाने लगा। जब सितार का निर्माण हुआ तो वीणा के उपरोक्त क्रियाओं के वादन के नियमों का पूर्ण अनुसरण सितार में प्रयुक्त होने लगा।

वीणा में प्रयुक्त होनेवाले मुख्य बोल डा ड़ा ड़िड डाड़ डडा है जिनको सितार के बोलो में दारा दिर दार द्रा कहा जाता है। देखा जाए तो सितार के मुख्य दो बोल होते है – 'दा' और 'रा' इन्ही बोलों को भिन्न–भिन्न हस्त क्रिया से उत्पन्न करने पर निम्नलिखित बोलों को दाहिने हाथ की तर्जनी से मिज़राब के आघात से उत्पन्न किया जाता है। जैसे–दिर, दा दिर दिर, रदा, दारदा, द्रा, द्रारदा इत्यादि। इन्हीं मुख्य बोलो के मिश्रण से अनेक प्रकार के छन्दो का निर्माण समय–समय पर सितार वादकों ने किया।

सितार वाद्य के प्रयुक्त बोलों का आधार पूर्णतः वीणा वाद्य ही है इसलिए तत्कालीन सितार बाज को वीणा वादन की शैली ही से विकसित किया गया था। वीणा के समान ही सितार में भी दस प्रकार की क्रियाओं का वादन किया जाता था। ऐसा शास्त्रकारों द्वारा वर्णित किया गया है। परिवर्तन की प्रक्रिया से होकर कालांतर में वीणा वादन में प्रचलित बारह प्रकार की वादन क्रियाएं आलाप, जोड़ झाला, ठोंक झाला, तोड़ा, लड़ी, गुथाव, लड़ गुथाव, कत्तार आदि सितार वादन पद्धति में समाविष्ट की गई।[1]

सितार वाद्य की वादन शैली को उन्नत अवस्था व लोकप्रियता प्रदान करने हेतु तत्कालीन विद्वानों ने आलाप, जोड़ आलाप के पश्चात् ध्रुपद के आधार पर विभिन्न बोलों की सहायता से 'गतों' का निर्माण किया। इन गतों के विस्तार एवं अलंकरण हेतु विभिन्न सौंदर्य उपकरणों, छन्दों का व्यवहार इन गतों के वादन में सम्मिलित किया गया।

सितार पर बजने योग्य गत का प्रथम रचनाकार नेमत खाँ (शाह सदारंग) को माना जाता है। जोकि मोहम्द शाह रंगीले के दरबारी गायक थें। शाह सदारंग के बाद सितार की गतों के निर्माण में उस्ताद फिरोज खाँ का नाम उल्लेखनीय है। शाह सदारंग द्वारा रचित गत का कोई नाम नहीं था, न ही उनके बोलों के क्रम का कोई विधान था। यह मात्र ध्रुवपद के सादे ढाँचे में रचित सितार पर बजने योग्य साधारण गत थी। जबकि फिरोज खाँ द्वारा रचित गतें "फिरोजखानी गत" कहलायी। [3]

फिरोज खाँ के पुत्र "मसीत खाँ" जो स्वंय एक वीणा वादक और ध्रुवपद गायक थे उन्होंने अपने वंश के प्रचलित रचनाओं को और भी अधिक परिष्कृत किया तथा सितार के बोलों को और भी अलंकृत किया। मसीत खाँ के समय तक भी गतों में प्रयुक्त बोलों का कोई निश्चित क्रम या विधान न था। उन्होंने अपने परिश्रम से गतों का निर्माण कर एक निश्चित बोल बन्धान की गत को प्रचारित किया तथा इस गत शैली के प्रस्तुतिकरण की ओर विशेष ध्यान दिया। इस गत के बोल सरल थे तथा इसकी बन्दिश में अधिकतर एक ही आवृत्ति का व्यवहार होता था इसका वादन मध्य लय तीन ताल में होता था। इन गतों के बोलों को क्रमशः "दिर दा दिर दा रा दा दा रा, दिर दा दिर दा रा दा दा रा" में बाँटा गया था। वैज्ञानिक दृष्टि से यह विभाजन बहुत ही सरल सुबोध और वादनोपयोगी सिद्ध हुआ इस कारण बहुत ही कम समय में यह गत शैली प्रचलित हुई।

मसीत खाँ के समय में ही उनके शिष्य द्वारा एक नयी शैली का निर्माण एवं प्रचार किया गया जो उन्हीं के नाम पर 'रजाखानी बाज" या "पूर्वी बाज" कहलायी। मसीतखानी बाज जहाँ ध्रुवपद और बीन के नियमों पर आधारित थी वहीं रज़ाखानी बाज ठुमरी

तराना और ख्याल के नियमों पर आधारित बाज है। रजाखानी बाज में मध्य और द्रुतगति की प्रधानता होने के साथ–साथ गतकारी में बोलो के कटाव पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इस बाज के वादन में मुख्यतः गत आरम्भ करने से पूर्व ठुमरी अंग से संक्षिप्त आलाप, जोड़ तत्पश्चात् गत तथा गत को ही विभिन्न लयकारियों में प्रस्तुत किया जाता था, तथा गत के मध्य छोटे–छोटे स्वर समूहों का प्रयोग कर गत को अलंकृत किया जाता था। ''दा'' और ''रा'' इन दोनों बोलों के विभिन्न मिश्रणों से भिन्न–भिन्न गति के अनुरूप ''दिर दा'', ''द्राडर'', ''दाडरदा'' आदि बोलों के प्रयोग ने ही इस गत प्रकार को मसीतखानी शैली से पूर्णतः भिन्न कर दिया।[5]

मसीतखानी बाज के सितारवादकों ने अधिकतर कल्याण खमाज, बिलाबल, काफी, भैरवी जैसे सरल एवं सात स्वरों से युक्त रागों को अपनाया था क्योंकि सम्पूर्ण (सात) स्वरों वाले रागों के स्वरों में सुन्दर गुथाव संभव होने के साथ ही उक्त रागों में क्रमवार स्वर प्राप्त होने के कारण स्वरों के विस्तार में सरलता होती है। जबकि पूर्वी बाज के विशेषज्ञों ने रागों के चयन में विशेष रुचि दिखाते हुए ठुमरी अंग के राग जैसे भैरवी, पीलू, काफी, खमाज, गारा, देश, जैजैवंती और तिलक कामोद आदि रागों का चुनाव किया। इन रागों में भी क्रमवार स्वर प्राप्त होने के साथ–साथ मधूर स्वर सन्निवेश सरलतापूर्वक प्राप्त होते है तथा बोल बाँट में भी सुविधा होती थी। इसके अतिरिक्त पूर्वी बाज के विशेषज्ञ मसीतखानी बाज नहीं बजाते थे तथा वादक एक से अधिक गतों का वादन अपने कार्यक्रम में प्रस्तुत कर अपने ज्ञान का परिचय देते थे।[6]

आगे तत्कालीन समय में बजाई जानेवाली बाज के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है–

गत–जैत– मसीदखानी तीनताल

x				2			
			डि ड	डा	डा	ड	डा
			11 11	15	15	10	10
			स स	प	प	रे	रे
0				3			
डा	डा	ड	डिड	डा	डिड	ड	डा
(1	1	1)	(11	1)	(7 5)	7	6
ग	म	ग	(ग ग	ग)	मं ध	ग	म
x							
डा	डा	ड					
9	10	11					
ग	रे	सा					

इस गत में डा और ड़ा पर अधिक बल दिया गया है।

पूर्वीबाज – गत खमाज मध्यलय

x				2			
ग	सं	ग	ग	–	रेग	म	पम
दा	दिर	दा	दा	–	रदा	दा	दिर
0				3			
म	प	–	धप	म	गम	ग	म
दा	दा	–	रदा	दा	दिर	दा	रा
x				2			
ग	मग	ग	ग	–	नी	ध	प
दा	दिर	दा	दा	–	र	दा	रा
0				3			
म	पध	मग	रेग	म–	मग	ग–	ग–
दा	दिर	दिर	दिर	दा–	रदा	र–	दा–

उपरोक्त गत में ''दा दिर दा – रदा'' की बाँट से बन्दिश या गत का निर्माण किया गया हैं तथा ''दा–रदा–र'' का अन्त में प्रयोग किया गया है।

संदर्भ सूची :

1. ''सितार मार्ग भाग–3'' लेखक श्रीपद बन्धोपाध्याय, पृ. 127
2. ''नगमातुलहिन्द'', लेखक अशफाक अली खाँ भूमिका उद्धृत सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज़ का विकास क्रम– रेखा निगम, पृ. 93
3. सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज़ का विकास क्रम– रेखा निगम, पृ. 93
4. संगीत सुदर्शन – लेखक सुदर्शनाचार्य भास्त्री, पृ. 26–27
5. भारतीय संगीत कोश, पृ. 17
6. सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज़ का विकास क्रम– रेखा निगम, पृ. 97
7. नगमाएं सितार– मिर्जारहीमबेग, पृ. 81 उद्धृत सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज़ का विकास क्रम– रेखा निगम, पृ. 106
8. असली तालीम सितार – प्रो. हामिद हुसैन खाँ, पृ. 86 उद्धृत सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज़ का विकास क्रम– रेखा निगम, पृ. 123